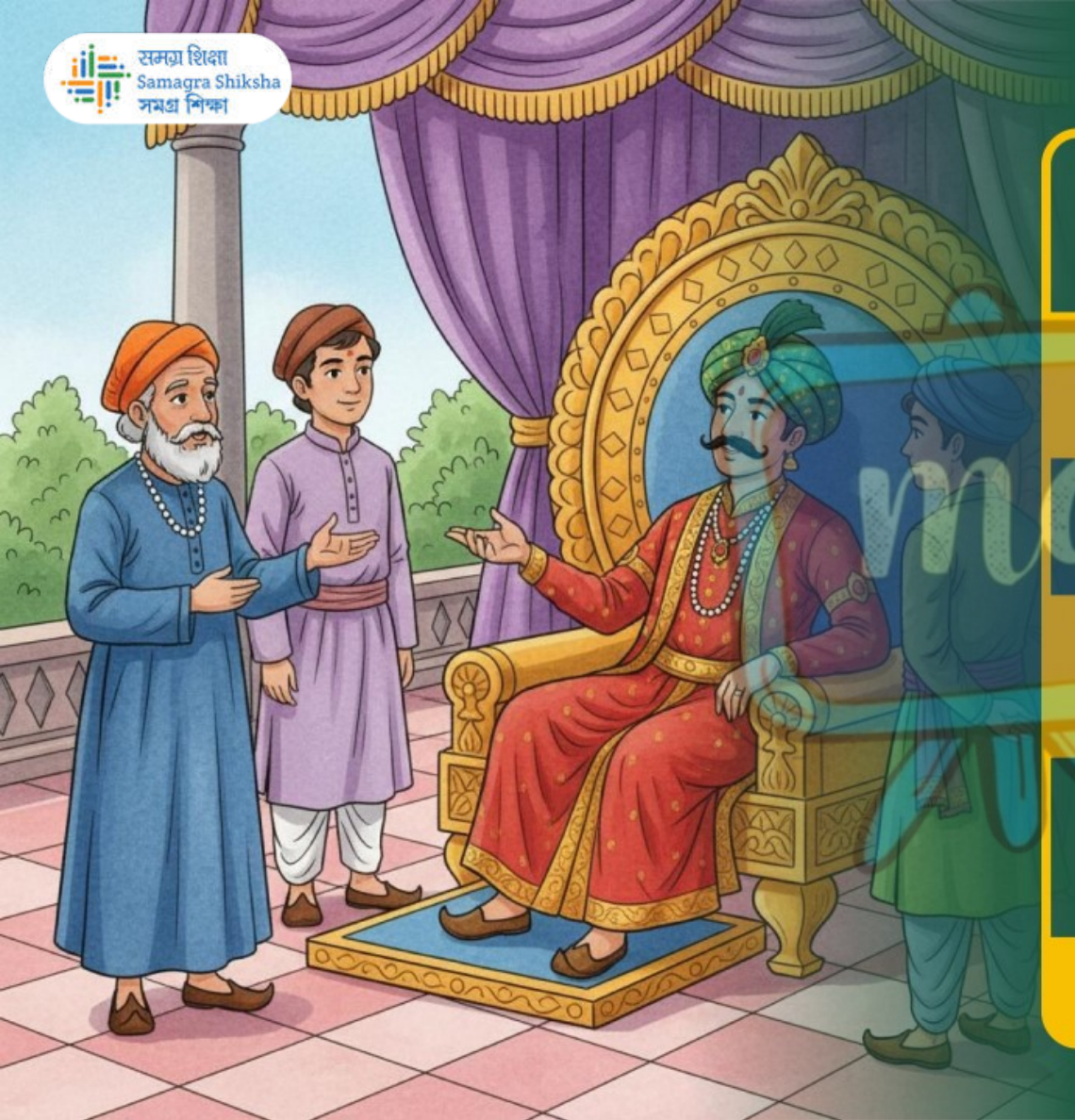


समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 2

परीक्षा

प्रेमचंद (1880-1936)

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



प्रेमचंद

परिचय

जन्म : 31 जुलाई, 1880 को बनारस के लमही गाँव में हुआ था।

मूल नाम : धनपत राय ।

शिक्षा : बी.ए.

कार्य जीवन : उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की; परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और वे लेखन कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रमुख उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान।

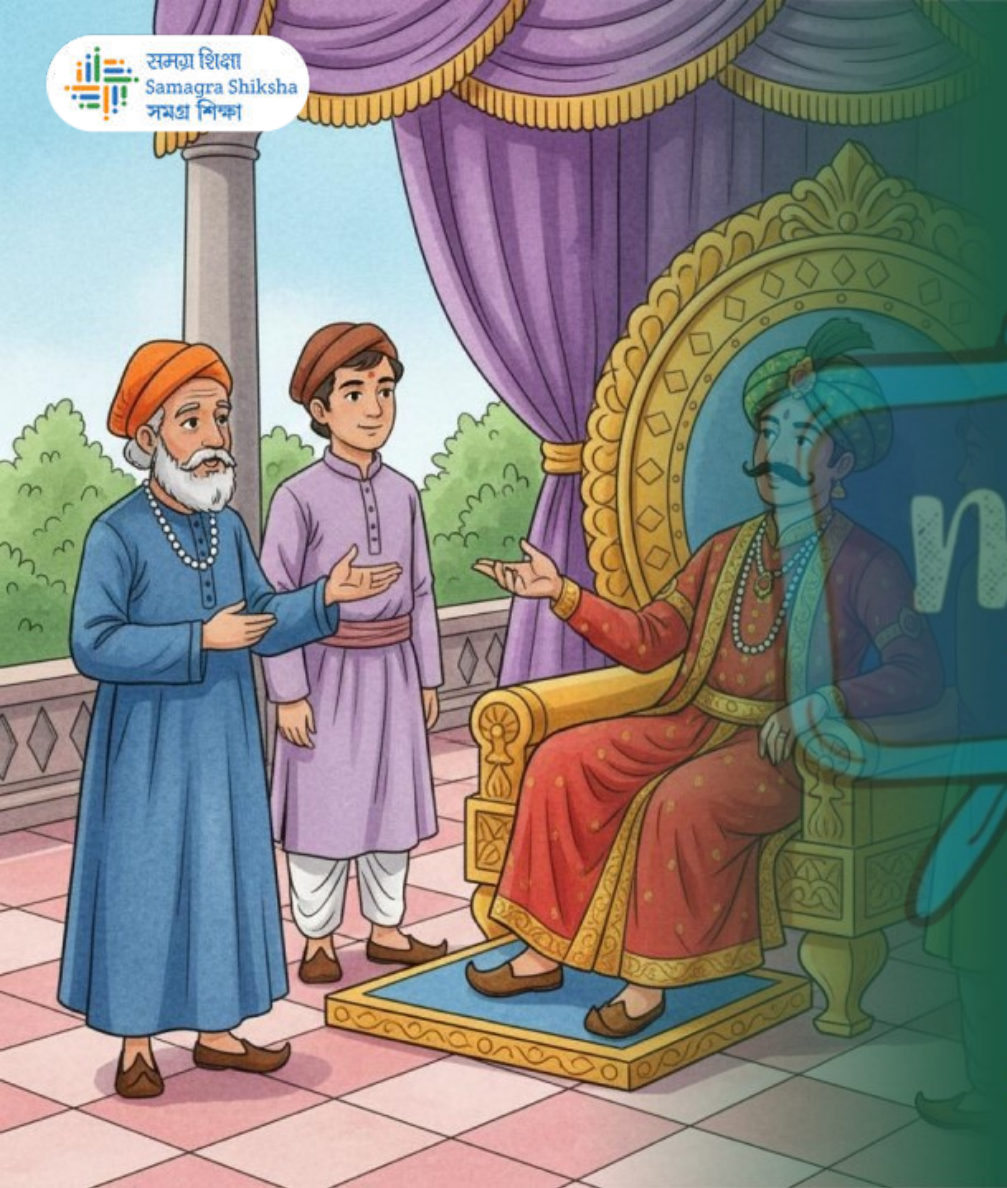
प्रेमचंद जी हिंदी और उर्दू के महान उपन्यासकार और कहानीकार थे,जिन्हें "उपन्यास सम्राट" की उपाधि दी गई थी।

रचनाओं के मूल विषय : किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति, दलितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा, समाज-सुधार , राष्ट्रीय भावना और स्वाधीनता आंदोलन आदि।

मृत्यु : 8 अक्टूबर, 1936

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

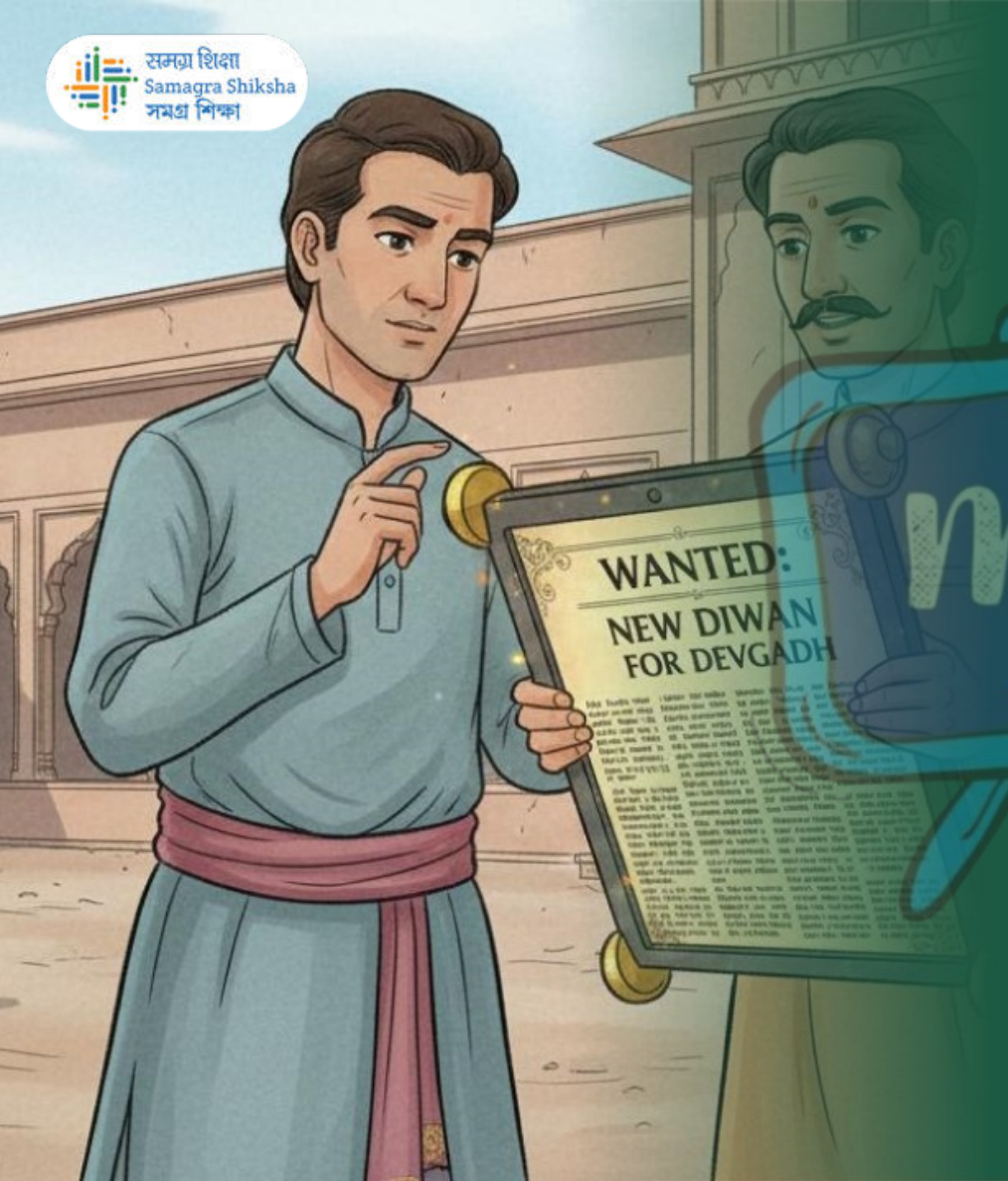
Under CSR Support by
ipca Foundation



परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए, तो उन्हें परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से उन्होंने विनय की, "दीनबंधु ! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की। अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता हैं। दूसरे, अब अवस्था भी ढल गई। राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रह गई।

रियासत	:	ৰাজকীয় ৰাজ্য
अवस्था	:	দশা, অৱস্থা



कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।" राजा-साहब अपने अनुभवशील और नीति-कुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना तो हारकर उन्होंने प्रार्थना स्वीकर कर ली। पर, शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान उन्हीं को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला - "देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की आवश्यकता है।

अनुभवशील : অভিজ্ঞ

जो सज्जन अपने को इस काम के योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं कि वे ग्रेजुएट हों; मगर उन्हें पुष्ट होना आवश्यक है। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।"

पुष्ट : শক্তিশালী
सुशोभित : সজাই তোলা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। कोई पंजाब से चला आता, तो कोई मद्रास से। कोई नए फैशन का प्रेमी था, कोई पुरानी सादगी पर मिटता हुआ था। पंडितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला।

परखना : পৰীক্ষা কৰা

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे; आजकल वे बगीचे में टहलते उषा के दर्शन करते थे। मिस्टर 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, परंतु आजकल बहुत रात गए, किवाड़ बंद करके अंधेरे में सिगरेट पीते थे।

प्रबंध	:	ব্যৱস্থা
किवाड़	:	দুৱাৰ

मिस्टर 'स, 'द' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था; लेकिन, ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकर से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे; मगर, आजकल उनकी धर्म-निष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती! मिस्टर 'ल' को किताबों से घृणा थी; परंतु आजकल वे बड़े-बड़े धर्म-ग्रंथ खोले, पढ़ने में डूबे रहते थे।

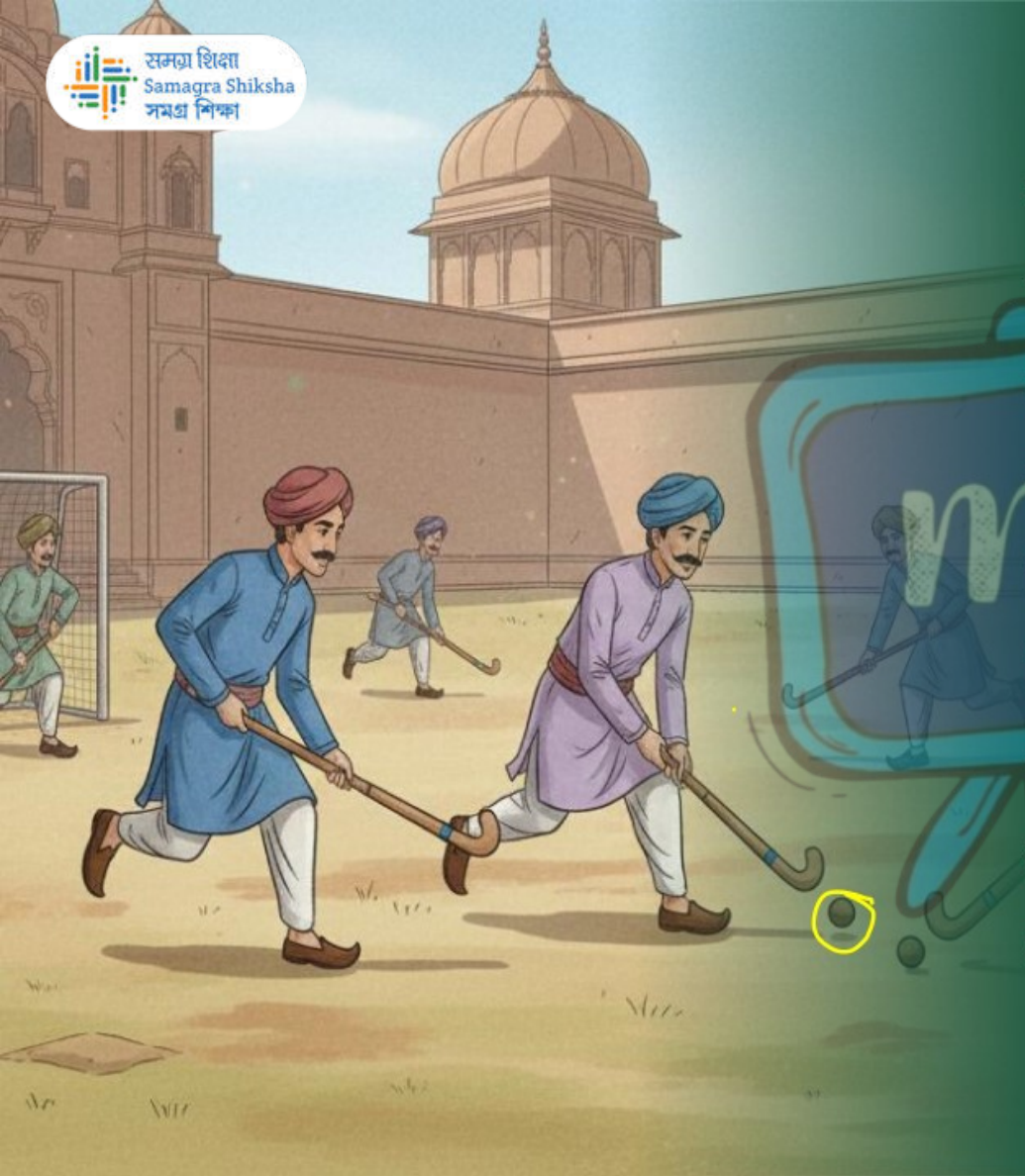
नास्तिक : ভগৱানক বিশ্বাস নকৰা লোক

पदच्युत : চাকৰিৰ পৰা বৰ্খাস্ত কৰা

जिससे बातचीत कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता मालूम होता था। लोग समझते थे कि एक महीने की झंझट है; किसी तरह काट लें। कहीं कार्य सिद्ध हो गया, तो कौन पूछता है?

लेकिन, मनुष्य का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है। एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए।

झंझट	:	आमनि
सिद्ध	:	प्रमाणित



यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर विद्या है। इसे क्यों छिपाकर रखे ? संभव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाएँ। चलिए, तय हो गया। कोर्ट बन गए ! खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के 'अप्रेंटिस' की तरह ठोकरें खाने लगी। रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराला था। खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद लेकर तेजी से उठते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली जाती है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



लेकिन, दूसरी ओर खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे मानो लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए। लेकिन, हार-जीत का निर्णय न हो सका।

निर्णय : सिद्धान्त

मूल्यांकन



1 | रियासत का नाम क्या था ?

क अलीगढ़

ख रामपुर

ग देवगढ़

मूल्यांकन



2 दास ने श्रीमान की सेवा कितने सालों तक की?

क 30 साल

ख 40 साल

ग 10 साल

मूल्यांकन



3 देश के प्रसिद्ध पत्रों में कौनसा विज्ञापन निकला ?

क दीवान चाहिए

ख शिक्षक चाहिए

ग नृत्याकार चाहिए

मूल्यांकन



4 दीवान के पद के लिए उम्मिदवारो को क्या होना आवश्यक था?

क ग्रेजुएट होना

ख पुष्ट होना

ग बात मानने वाला

मूल्यांकन



5 | रियासत मे कौनसे खेल का आयोजन किया गया?

- क फुटबॉल
- ख क्रिकेट
- ग हॉकी ✓